“नष्ट किया जाने वाला अंतिम शत्रु—मृत्यु”

1 कुरिन्थियों 15:24–26
“इसके बाद अंत होगा, जब वह सब प्रधानताओं, अधिकारों और सामर्थों को नष्ट करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक वह अपने सब शत्रुओं को अपने
पाँवों तले न कर ले, तब तक उसका राज्य करना आवश्यक है। नष्ट किया जाने वाला अंतिम शत्रु मृत्यु है।”

मसीह की विजय—क्रमिक रूप से

यह अंश 1 कुरिन्थियों 15 में पुनरुत्थान के विषय में पौलुस की गहन और सामर्थी शिक्षा का भाग है। यहाँ वह उस सच्चाई को प्रकट करता है जिसे धर्मशास्त्र में “पहले से आरम्भ हुई, पर अभी पूर्ण न हुई अन्तकालिक योजना” कहा जाता है। अर्थात, मसीह की विजय उसके क्रूस और पुनरुत्थान में शुरू हो चुकी है, पर उसकी पूर्णता उसके दूसरे आगमन पर होगी।

पौलुस राजत्व और विजय की भाषा का प्रयोग करता है और पुराने नियम—विशेषकर भजन 110:1—का संदर्भ देकर दिखाता है कि यीशु अभी स्वर्ग में राज्य कर रहा है।

भजन 110:1
“यहोवा मेरे प्रभु से कहता है: ‘मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं
तेरे शत्रुओं को तेरे पाँवों की चौकी न कर दूँ।’”

चरण 1: क्रूस के द्वारा उद्धार

यीशु का पहला आगमन मानवजाति को पाप और आत्मिक मृत्यु से छुड़ाने के लिए हुआ (यूहन्ना 3:16–17)। क्रूस पर उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उसने शैतान, पाप और कब्र पर आत्मिक रूप से विजय पाई।

कुलुस्सियों 2:15
“उसने प्रधानताओं और अधिकारों को निःशस्त्र करके उन पर जय-जयकार की और उन्हें खुलेआम लज्जित किया।”

जो कोई मसीह पर विश्वास करता है, वह अनन्त जीवन पाता है, यद्यपि उसका शरीर अभी भी शारीरिक मृत्यु से होकर गुजरता है। इसी कारण हम कहते हैं कि उद्धार अभी प्राप्त है, पर अभी पूरी तरह प्रकट नहीं हुआ। हम अब उद्धार पाए हुए हैं, पर अपने शरीरों के पूर्ण

रूपान्तरण की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चरण 2: मसीह का वर्तमान राज्य और उसका दूसरा आगमन

आज यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा हुआ राज्य कर रहा है, जब तक उसके सभी शत्रु पराजित न हो जाएँ (इब्रानियों 10:12–13)। परन्तु अंतिम शत्रु—मृत्यु—अब भी विद्यमान है। मसीह का दूसरा आगमन सम्पूर्ण न्याय, अंतिम निर्णय और पूर्ण पुनर्स्थापन लेकर आएगा।

इब्रानियों 9:28
“उसी प्रकार मसीह भी बहुतों के पापों को उठाने के लिए एक ही
बार बलिदान हुआ, और वह दूसरी बार बिना पाप से सम्बन्ध रखे
उनके उद्धार के लिए दिखाई देगा जो उसकी बाट जोहते हैं।”

अपने लौटने पर मसीह:

जातियों का न्याय करेगा (मत्ती 25:31–46)
शैतान और दुष्टात्मिक शक्तियों को बाँधकर पराजित करेगा (प्रकाशितवाक्य 19:20; 20:10)
पृथ्वी पर शान्ति का एक हज़ार वर्ष का राज्य स्थापित करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:4)

यशायाह 65:20
“वहाँ ऐसा न होगा कि कोई बालक थोड़े दिनों का होकर मर जाए… क्योंकि जो सौ वर्ष का होकर मरेगा, वह जवान ही समझा जाएगा।”

यह सहस्राब्दी राज्य पृथ्वी को शाप से आंशिक रूप से मुक्त करेगा। उस समय शान्ति, न्याय, दीर्घायु और सामंजस्य स्पष्ट रूप से दिखाई देगा।

चरण 3: मृत्यु की अंतिम पराजय

एक हज़ार वर्षों के बाद शैतान थोड़े समय के लिए छोड़ा जाएगा, फिर से पराजित होगा और आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:7–10)। इसके बाद अंतिम शत्रु—मृत्यु—का सम्पूर्ण अंत होगा।

प्रकाशितवाक्य 20:14
“फिर मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाल दिए गए। यही दूसरी मृत्यु है—आग की झील।”

यही वह क्षण है जिसकी घोषणा पौलुस 1 कुरिन्थियों 15:26 में करता है:
“नष्ट किया जाने वाला अंतिम शत्रु मृत्यु है।”
उसके बाद फिर कभी मृत्यु नहीं होगी।

अनन्तकाल: नया आकाश और नई पृथ्वी

मृत्यु की पराजय के बाद परमेश्वर नया आकाश और नई पृथ्वी प्रकट करेगा, जहाँ वह सदा के लिए अपने लोगों के साथ वास करेगा।

प्रकाशितवाक्य 21:1–4
“फिर मैंने नया आकाश और नई पृथ्वी देखी… वह हर एक आँख से
आँसू पोंछ देगा, और मृत्यु फिर न रहेगी…”

इसके बाद यीशु राज्य को परमेश्वर पिता को सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:24), क्योंकि उद्धार की योजना पूर्ण हो चुकी होगी। तब आराधना केवल उद्धार या चरवाही तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि परमेश्वर के साथ अनन्त और पूर्ण संगति पर केन्द्रित होगी।

यह आज हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है

मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके अंतिम आगमन तक की यह पूरी प्रक्रिया हमें परमेश्वर के गहरे प्रेम और उसकी सिद्ध योजना को दिखाती है। यद्यपि आज हम दुःख, संघर्ष और मृत्यु का सामना करते हैं, फिर भी मसीह में हमें पूर्ण विजय का पक्का भरोसा है।

रोमियों 8:18
“क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दुःख उस महिमा के सामने
कुछ भी नहीं हैं जो हम पर प्रकट होने वाली है।”

यीशु शीघ्र आने वाला है। क्या आप तैयार हैं? यदि नहीं, तो आज ही मन फिराइए, उस पर विश्वास कीजिए और अनन्त जीवन पाइए।

यूहन्ना 11:25
“यीशु ने उससे कहा, ‘पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो मुझ
पर विश्वास करता है, वह मरकर भी जीवित रहेगा।’”

परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जो कुछ तैयार किया है, वह हमारी

कल्पना से कहीं बढ़कर है:

1 कुरिन्थियों 2:9
“जैसा लिखा है, ‘जो आँख ने नहीं देखा, कान ने नहीं सुना और जो मनुष्य के मन में नहीं आया—वही परमेश्वर ने अपने प्रेम
रखने वालों के लिए तैयार किया है।’”

देर न करें। आज ही अपना जीवन यीशु मसीह को समर्पित करें।

प्रभु आपको आशीष दे और आपको अपनी शान्ति से भर दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp